अनारतं तेन पदेषु लम्भिता विभज्य सम्यग्विनियोगसत्क्रिया:।

फलन्त्युपाया: परिबृंहितायतीरुपेत्य संघर्षमिवार्थसम्पद: ॥१५॥

अन्वय –

तेन पदेषु सम्यक् विभज्य लम्भिता: विनियोगसत्क्रिया: उपाया: संघर्षम् उपेत्य इव परिबृंहितायती: अर्थसम्पद: अनारतं फलन्ति ॥ १५ ॥

अर्थ-

उस दुर्योधन द्वारा भली भांति समझ-बूझकर यथायोग्य पात्र में प्रयोग किये जाने से सत्कृत साम, दान, दण्ड और भेद-ये चारों उपाय, एक दूसरे से परस्पर स्पर्द्धा करते हुए-से उत्तरोत्तर बढ़ने वाली धन-सम्पत्ति एवं ऐश्वर्य राशि को सर्वदा उत्पन किया करते हैं ॥१५॥

टिप्पणी-

तात्पर्य यह है कि दुर्योधन साम दानादि नीतियों का यथायोग्य पात्र में खूब समझ-बूझकर प्रयोग करता है और इससे उत्तरोत्तर उसकी अचल धन-सम्पत्ति एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती चली जा रही है।

यहाँ उत्प्रेक्षा अलङ्कार है।

अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलं तदीयमास्थाननिकेतनाजिरम्।

नयत्ययुग्मच्छदगन्धिरार्द्रतां भृशं नृपोपायनदन्तिनां मदः ॥१६॥

अन्वय-

नृपोपायनदन्तिनाम् अयुग्मच्छदगन्धिः मदः तदीयम् अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलम् आस्थाननिकेतनाजिरम् भृशम् आर्द्रतां नयति ॥१६॥

अर्थ –

छितवन (सप्तपर्ण) के पुष्प की सुगंध के समान गन्ध वाले राजाओं द्वारा भेंट में दिए गए हाथियों के मद जल, अनेक राजाओं के रथों और घोड़ों से भरे हुए उसके सभाभवन के प्रांगण को अत्यन्त गीला बनाये रखते हैं ॥ १६ ॥

टिप्पणी-

तात्पर्य यह है कि दुर्योधन की सभा में देश-देशान्तर के राजा सर्वदा जुटे रहते हैं और उनके रथों, घोड़ों और हाथियों की भीड से उसके सभाभवन का प्रांगण गीला बना रहता है । अर्थात् उसका प्रभाव अब बहुत बढ़ गया है। यहाँ उदात्त अलंकार है।